

कैंसर नियंत्रण की दिशा में उठाने होंगे बड़े कदम

जागरूकता बढ़ाकर, शिक्षा का बढ़ावा दकर, दूसरा का नातक रूप से काय करन के लिए प्रोत्साहित करके और कैंसर के खिलाफ लड़ाई में समर्थन देकर ऐसे लोगों का जीवन बचाना है जिसे देका और ठीक किया जा सकता है। एकजुट होकर और कार्म करके हम इस बीमारी से हमारा स्वास्थ्य, हमारी अर्थव्यवस्था और एक समाज के रूप में हमारी आत्माओं पर पड़ने वाले असर को कम कर सकते हैं। कैंसर दुनियाभर में मौत का प्रमुख कारण बना हुआ है। विश्व स्वस्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट के अनुसार 2020 में लगभग एक करोड़ लोगों की मौत कैंसर से हुई थी। जिसमें ब्रेस्ट और लंग कैंसर के सबसे अधिक मामले सामने आए थे। डब्ल्यूएचओ के अनुसार दुनिया भर में कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाने से कैंसर के कारण होने वाली मौतों की संख्या का 30-50 प्रतिशत तक कम करने में मदद मिल सकती है। कैंसर की चुनौती से निपटने का सबसे अच्छा तरीका इस मुद्दे के बारे में लोगों से बातचीत शुरू कर के जागरूकता बढ़ायी जाये। तभी कैंसर जैसी जावलेवा बिमारी से लोगों की जीवन रक्षा की जा सकेगी।



रमश सराफ धमार स्वतंत्र पत्रकार



सुनते ही घबराहट होने लगती हैं कैंसर से पीड़ित व्यक्ति बीमारी अधिक तो कैंसर के नाम से डर जाता है। जिस व्यक्ति को कैंसर होता है वह तो गंभीर यातना से गुजरता ही है उसका साथ ही उसका परिवार को भी बहुत कष्टमय स्थिति में गुजरना पड़ता है जानलेवा होने के साथ ही कैंसर बीमारी में मरीज को बहुत अधिक शारीरिक पीड़ा भी झेलनी पड़ती है कैंसर की बीमारी इतनी भयावह होती है जिसमें मरीज की मौत सुनिश्चित मार्ग जाती है। बीमारी की पीड़ा व मौत दर से मैरिज घट-घट कर मरता है।

कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाव और इसकी रोकथाम, पहचान और उपचार को प्रोत्साहित करने के लिए फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है। विश्व कैंसर दिवस का जन्म 4 फरवरी 2000 को पेरिस में - मिलेनियम के लिए कैंसर के खिलाफ विश्व शिखर सम्मेलन में हुआ था विश्व कैंसर दिवस का प्राथमिक लक्षण कैंसर और बीमारी के कारण होने वाली मौतों को कम करना है। 1930 में अंतर्राष्ट्रीय कैंसर नियन्त्रण संघ

विश्व कैंसर दिवस मनाया था।
यह दिवस कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाने, लोगों को शिक्षित करने, इस रोग के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए दुनिया भर में सरकारों और व्यक्तियों को समझाने तथा हर साल लाखों लोगों को मरने से बचाने के लिए मनाया जाता है। 2014 में इसे विश्व कैंसर धोषणा के लक्ष्य 5 पर केंद्रित किया गया है। जो कैंसर के कलंक को कम और मिथकों को दूर करने से संबंधित है।

दुनिया भर में हर साल एक करोड़ से अधिक लोग कैंसर की बीमारी से दम तोड़ते हैं। जिनमें से 40 लाख लोग समय से पहले (30-69 वर्ष आयु वर्ग) मर जाते हैं। इसलिए समय की मांग है कि इस बीमारी के बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथ कैंसर से निपटने की व्यावहारिक रणनीति विकसित करनी चाहिये। 2025 तक कैंसर के कारण समय से पहले होने वाली मौतें के बढ़कर प्रति वर्ष एक करोड़ से अधिक होने का अनुमान है। यदि विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2025 तक कैंसर के कारण समय से पहले

लक्ष्य को हासिल किया जाए त
र साल 15 लाख जीवन बचाए ज
ाकरते हैं।
अमेरिका और चीन के बाद दुनिया
सबसे ज्यादा केंसर मरीज भारत
। 2020 में 1.93 करोड़ नए कैंसर
रीज सामने आए हैं। जिनमें 14 लाख
अधिक भारतीय हैं। इन्हाँ ही नह
भारत में सालाना बढ़ते केंसर मामलों
चलते 2040 तक इनकी संख्या
7.5 फीसदी तक की बढ़ोतारी हो
गी आशंका है। भारतीय चिकित्सा
नुसंधान परिषद के राष्ट्रीय कैंसर
जिस्ट्री कार्यक्रम के अनुसार देश
केंसर के मामलों की संख्या 2025
14.6 लाख से बढ़कर 2025
5.7 लाख होने का अनुमान है।
जसके लिए सरकार को चिकित्सा
वयस्था को और अधिक मजबूत
उनने की जरूरत है। तभी समय प
केंसर मरीजों की जांच से पहचान क
ही उपचार कर देकर उनकी जा
र्चाई जा सकती है।
नई दिल्ली स्थित भारतीय
युविज्ञान अनुसंधान परिषद
आईसीएमआर) ने कहा है कि देश

निगरानी नहीं हो पा रही है। जिस कारण अधिकांश मामलों में बीमारी का देरी पता चल रहा है। देश के सभी शेष केंद्रों को पत्र लिख आईसीएमआर ने कैंसर की जांच और निगरानी का आसान बनाने के लिए प्रस्ताव मांग रहा है। देश के सभी जिलों में कैंसर निगरानी और जांच को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य अनुसंधान के तहत नई नीति बनाकर के लिए आईसीएमआर को जिम्मेदारी सौंपी है। इसके लिए अलग-अलग शोध टीमें गठित होंगी और भौगोलिक व स्वास्थ्य सेवाओं की मौजूदा स्थिति के आधार पर वैज्ञानिक तथ्य एकत्रित किए जाएंगे।

आकड़े बताते हैं कि भारत कैंसर से साल 2020 में 7,70,231, 2021 में 7,89,202 और 2022 में 8,08,558 लोगों की मौत हुई है। देश में कैंसर के मामलों की कुल संख्या 2022 में 14,61,427 रही। वह 2021 में यह 14,26,447, जबकि 2020 में 13,92,179 थी। सबके ज्यादा कैंसर के मरीज उत्तर प्रदेश में हैं। यहां 2020 में 2,01,311

2,10,958 मरीज मिले। वहाँ सबसे कम कैंसर मरीज केंद्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप में हैं। यहां 2020 में 27, 2021 और 2022 में 28-28 मरीज मिले हैं।

कैंसर रोगों का एक समूह है जो असामान्य कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि और प्रसार से होता है। ये कोशिकाएं ट्यूमर नामक द्रव्यमान का निर्माण कर सकती हैं। जो शरीर के सामान्य कामकाज में हस्तक्षेप कर सकती हैं। जबकि कैंसर किसी को भी प्रभावित कर सकता है। इह पहचानना आवश्यक है कि कुछ जीवनशैली विकल्प, जैसे धूम्रपान, खराब आहार और शारीरिक गतिविधि की कमी, कैंसर के विकास के जोखिम को बढ़ा सकते हैं।

हाल ही में आई एक रिपोर्ट के मुताबिक फफड़ों का कैंसर (लांग्स कैंसर) सबसे खतरनाक कैंसर हो सकता है। हालांकि देश में भी लाम्स कैंसर के केस तेजी से बढ़ रहे हैं। डॉक्टरों का अनुमान है कि 2023 के आखिर तक करीब 2.38 लाख से ज्यादा लोगों में लाम्स कैंसर मिल सकता है।

विश्व कैंसर दिवस 2024 की थीम देखभाल में वैश्विक असमानताओं को रेखांकित करती है। यह कैंसर वैदिक लड़ाई में सभी के लिए समाज स्वास्थ्य देखभाल के महत्व पर जो धृति देते हुए गुणवत्तापूर्ण उपचार तक पहुंचने में अंतर को पाठने के लिए सामूहिक कार्रवाई का आहारन करता है।

कैंसर का पता लगाने, कैंसर के प्रकार और कारण, डायग्नोस्टिक्स और उपचार में काफी प्रगति हुई है। लेकिन अफसोस की बात है कि दुनिया कई ज्यादातर आबादी के पास अभी भी बुनियादी स्वास्थ्य सेवायें नहीं पहुंच पायी हैं। जिसमें गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं की देखभाल, रेगुलेशन, टीकाकरण, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं और पुरानी बीमारी का इलाज शामिल है। कैंसर की रोकथाम के बांधों में जागरूकता फैलाकर, हेलथ केयर प्रोफेशनल्स को ट्रेनिंग देकर, इफेक्टिव कायूनिटी बेस्ड प्लान को लागू करके हम इस बीमारी से बचाव कर सकते हैं।

विश्व कैंसर दिवस दुनिया पर कैंसर के प्रभाव को कम करने के लिए सर्वोच्च के लिए मिलकर काम करने का एक अवसर है।

ਅਜਦਥਾ ਜਹਾ ਕਿਏ ਲਕਤ ਰਾਕਟਾਧਾਰੀਆਂ ਕਿ ਨਾਇਗਗਾ ਕਿ

हिंचकिंचाहट के धर्म के साथ राजनीति पर अपने विचारों को अपने प्रवचनों में बताया है। गांधी खुले तौर पर राम को अपने भगवान और उद्घारकर्ता के रूप में देखा और राम को एक समावेश राजनीतिक संभाषण में ले कर आए। उन्होंने कहा- ह्यराम ने... मेरे सबसे अंधेरे समय व रोशन कर दिया है। एक ईसाई को यीशु का नाम जपने से वैसी ही सांत्वना मिल सकती है औ अल्लाह का नाम जपने से एक मुस्लिम को वैसी ही तसल्ली मिल सकती है। इन सभी चीजों द्वारा समान निहितार्थ हैं और वे समान परिस्थितियों में समान परिणाम उत्पन्न करते हैं, लेकिन (नाम जप की) यह पुनरावृत्ति सिर्फ होंठों की अभिव्यक्ति नहीं होनी चाहिए बल्कि आपके अस्तित्व व हिस्सा होना चाहिए।



स्वतंत्र लेखक

राजनीतिक ताकतों के सामने एक ताजा असंतोष लाते हैं जिन ताकतों असंतोष को मिटाने के लिए सब कुछ किया है। हमारे यहां राजनीति और धर्म का घालमेल है लेकिन जहां तक वे देश की अच्छी तरह से सेवा करते हैं। ऐतिहासिक रूप से शंकराचार्य के विचार हमेशा प्रगतिशील नहीं रहे हैं और उन्होंने सामाजिक-धर्मिक सुधारों और सभी जातियों और वर्गों के लिए मंदिर-प्रवेश के मुद्दों पर गांधी की लड़ाई का स्वागत नहीं किया है।

22 जनवरी को राम मंदिर ने उद्घाटन को लेकर भारत के बड़े हिस्सों में उत्साहपूर्ण अभृतपूर्व प्रतिक्रिया देखने को मिली है, तो वहां दूसरे तरफ आंतरिक विसंगतियों के साथ बड़े धर्मार्थी-शक्तराचार्यों के काविरोध के बीच सदियों पुराने शास्त्रों और हिंदू परंपराओं के उल्लंघन व हवाला दिया गया है। यह समारोह

में जहां इसने एक राजनीतिक लामबंदी को उजागर किया। जिसने भाजपा और कई अन्य को आश्वासन दिया कि इससे 2024 के राष्ट्रीय चुनावों में पार्टी को अभूतपूर्व लाभ मिलेगा। पहले मंदिर के उद्घाटन का विरोध, शास्त्रीयों की तकनीकी बातों पर जिक्र, किरन मिशन्नण पर और बाद में समग्र औचित्य और राजनीतिक कब्जे के बड़े मुद्दों पर मतभेद सामने आए। जो मंदिर समर्थक व्यापक समूह के भीतर एक साझा समझ और विश्वास के आंतरिक विरोध की ओर इशारा करते हैं। हर कोई उस कमांड-एंड-कंट्रोल ऑपरेशन को पचाने के लिए तैयार नहीं है जिसे भाजपा के रणनीतिकारों ने मंदिर आंदोलन में बदल दिया है। निश्चित रूप से शंकराचार्य भी नहीं जिन्होंने एक महत्वपूर्ण मुहूर पर विरोध जताया है। ऐसा महसूस होता है कि भाजपा अपने मतदाताओं से कह

और कोई प्रश्न न पूछेंगे लाल राजनीतिकों की फौज के कई लोग इसपर हमत प्रतीत होते हैं। लेकिन अब जनसभाज है, वे मानों कहते हैं- हालामन सके लिए लड़ाइ लड़ी और यह वही ही है जिस बारे में हमने बातचीती नी थी।

उद्घाटन की तारीख, अधिष्ठानमारोह के केन्द्र में प्रधानमंत्री व राजनीतिकों, शंकराचार्यों के साथ अशोभनीय यवहार और बाद में कार्यक्रम : अमिल होने से उनका इंकार, भाजपा निर्मात्रक उद्योगपतियों की उपरिधानी और निमित्रितों के चयन में धन और गोदाविकरण का प्रदर्शन, भौतिक आडंबंदर और ध्यान केंद्रित करना, राजनीतिकों द्वारा से किए गए उद्घाटन में सुरक्षा लोगों के अपरिहार्य अत्यधिक उपयोगों को लेकर मंदिर के मुद्दे पर भाजपा को साथ माने जाने वाले लोगों ने वाल उठाए हैं। यह पहली बार न

A portrait of a sage (Yogi) with a shaved head and a white beard, wearing a yellow turban and orange robes, with a mala around his neck.



ताकालिक कारण की ओर इशारा नहीं करती है। शंकराचार्यों को रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा की तारीख, किसी शुभ मुहूर्त, मूर्ति से कुछ लेना-देना नहीं है। आने वाले चुनावों को निगाह में रखकर भाजपा यह सब कुछ कर रही है। शंकराचार्यों ने जोर देकर और हट विश्वास के साथ बताया है कि चौकी मंदिर का निर्माण कार्य अभी जारी है और पूरा नहीं हुआ है इसलिए इसका उद्घाटन अभी नहीं किया जा सकता है।

संक्षेप में, शंकराचार्यों की ओर से जो बयान आ रहे हैं उन्होंने भाजपा के उस सपने को तहस-नहस कर दिया है जिस पर भाजपा अपना चुनाव अभियान तैयार करती दिख रही है। इन आलोचकों में ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती और पुरी पीठ के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती प्रमुख हैं।

नैतिकता में एक मजबूत आधार है लेकिन जरूरी नहीं कि यह एक राजनीतिक बढ़त हो जिससे भाजपा चित्तित हो सकती है। उन वोटों में शंकराचार्य सेध नहीं लगा सकते हैं जिन्हें भाजपा मंदिर के बदले में भुनाने की उम्मीद करती है। फिर भी शंकराचार्य, उनकी संस्था में सन्निहित वेद और शास्त्रों तथा समझ के प्रारंभ के एक महत्वपूर्ण बिंदु को चिह्नित करते हैं। वे उन लोगों को यूनौती देते हैं जो राजनीतिक पुरस्कारों के लिए वेद और उन की तरह के शास्त्रों और परंपराओं का उपयोग कर रहे हैं।

यह उल्लेखनीय है कि अयोध्या के घटनाक्रम के खिलाफ एक स्पष्ट और मुखर नजरिया भाजपा के राजनीतिक विरोधियों की ओर से नहीं बल्कि धार्मिक नेताओं की ओर से आया है जो स्पष्ट तरीके से अपने तरक्क रखते हुए संघर्ष कर रहे हैं।

कार्य करेंगे। इस तीन दिवसीय सम्मेलन के दौरान विश्व शांति और मानव एकता एकता सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष थे। प्रथम मानव एकता सम्मेलन की रुहानी मिशन द्वारा मानव कल्याण हेतु सामाजिक और जरूरतमंद भाई-बहनों किया जाएगा तथा सावन कृपाल रुहानी मिशन की ओर से दिल्ली के अनेक लोगों द्वारा उपलब्ध करेंगे।

सम्मेलन 4

बग, दल्ला म आयोजित किया जा रहा है। सावन कृपाल रुहानी मिशन के प्रमुख संत राजिन्दर सिंह जी महाराज की अध्यक्षता में इस वर्ष इस सम्मेलन में प्रेम, मानव एकता और विश्व शांति के सिद्धांतों पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

यह सम्मेलन प्रतिवर्ष फरवरी के महीने में परम संत कृपाल सिंह जी महाराज ;1894-1974द्वे के जीवन को याद करते हुए 6 फरवरी को उनके जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। परम संत कृपाल सिंह जी अनेक धर्मों के प्रमुख और विश्व के विभिन्न देशों से आए अनेक प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भाग लेकर एक-दूसरे के विचारों को समझते हए मानव एकता के अयोजन के अलावा मुफ्त मात्राबद्ध ऑपरेशन शिविर और रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया जाएगा। इस सम्मेलन में देश-विदेश से हजारों की संख्या में लोग भाग लेंगे।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के दौरान संत राजिन्दर सिंह जी महाराज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आंतरिक शांति, एकता और करुणा विषय पर अपना प्रभावशाली संदेश दिया। सम्मेलन के दौरान 5 फरवरी को ह्याध्यान-अभ्यास, आंतरिक शांति और एकता का मार्ग तथा 6 फरवरी को ह्य कृपाल-दिव्य प्रेम और करुणा के मसीहाल विषयों पर सेमिनार का आयोजन किया जाएगा।

इसके अलावा सम्मेलन के दौरान 5 फरवरी को 62वें रक्तदान शिविर गई था।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के दौरान संत राजिन्दर सिंह जी महाराज ने अपने डॉक्टर्स और आई केयर अस्पताल, नौंडा के सहयोग किया जाएगा। जिससे सेकड़ों की संख्या में भाई-बहनों को आंखों की रोशनी का उपहार प्राप्त होगा। इन शिविरों से आज तक लगभग 15000 आंखों के मरीजों ने लाभ प्राप्त किया है।

जाच आर मात्राबद्ध आपरशन शिविर का आयोजन अमेरिका से आए डॉक्टर्स और आई केयर अस्पताल, नौंडा के सहयोग किया जाएगा। जिससे सेकड़ों की संख्या में भाई-बहनों को आंखों की रोशनी का उपहार प्राप्त होगा। इन शिविरों से आज तक लगभग 15000 आंखों के मरीजों ने लाभ प्राप्त किया है।

जाच आर मात्राबद्ध आपरशन शिविर का आयोजन अमेरिका से आए डॉक्टर्स और आई केयर अस्पताल, नौंडा के सहयोग किया जाएगा। जिससे सेकड़ों की संख्या में भाई-बहनों को आंखों की रोशनी का उपहार प्राप्त होगा। इन शिविरों से आज तक लगभग 15000 आंखों के मरीजों ने लाभ प्राप्त किया है।

साइक्ल, क्रांचस के अलावा खान-पीने की वस्तुएं, दवाईयां और फलों का वितरण किया जाएगा।

पिछले 10 वर्षों के दौरान भारत के नागरिकों ने वित्तीय क्षेत्र में कई सकारात्मक बदलाव देखे हैं। केंद्र सरकार द्वारा प्रयास किया गया है कि भारत में सर्वसमावेशी, सर्वांगीण एवं सर्वस्पर्शी विकास हो। देश में खाद्यान की चिंता दूर हुई है। ग्रामीण इलाकों के प्रधानमंत्री अवास योजना के माध्यम से कराइ गई है। 150 करोड़ से आधक बव योजनाओं का लाभ सीधे ही इन बैंकों के हाथों में पहुंचे। 80 करोड़ नागरिकों को मुफ्त राशन उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना के अंतर्गत 11.8 करोड़ किसानों को 6,000 रुपए प्रतिवर्ष सम्मान निधि दी जाएगी।

उद्देश्य को पाने के लिए एक जुट होकर महाराज विश्व धर्म संघ तथा मानव इस सम्मेलन में सावन कृपाल का आयोजन कृपाल बाग, दिल्ली में लगभग एक करोड़ नए मकान निर्मित है।

